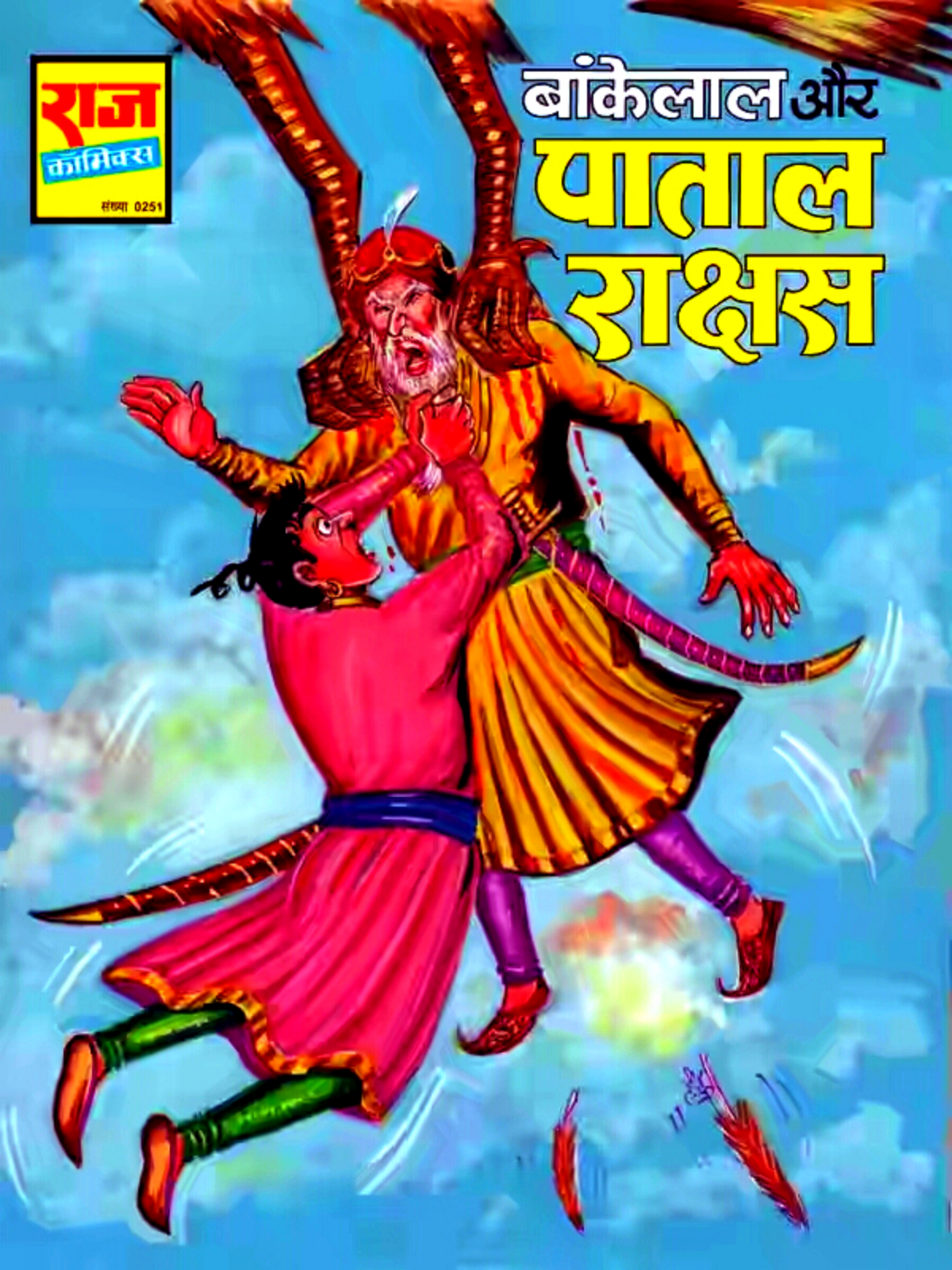
राज
कॉमिक्स
संख्या 0251
बांकेलाल और
पाताल
राक्षस

VISIT…

बांकेलाल और पाताल राक्षस

चित्रांकन : बेदी
लेखक : तरुण कुमार दाही
संपादन : मनीष चन्द्र गुप्त

एक बार राजा विक्रमसिंह के अयोध्यापुर चंद्रनगढ़ के राजा चंद्रभसिंह पर उनके पड़ोसी देश के राजा समरथसिंह ने आक्रमण कर दिया –

राजा चंद्रभसिंह...
मारो मारो
विजयी रहें!
राजा समरथसिंह...
जिंदाबाद
काट डालो!
हाय मरा!

भयंकर युद्ध हुआ –

स्वनोक
टनाक
खड़ड़
ध्वत्त्य
आहऽऽ

किंतु दोनों ही सेनाओं में हार-जीत का फैसला न हो सका –

और आपसी संधि के बाद युद्ध समाप्त हो गया।

इस युद्ध का प्रभाव ये पड़ा कि राजा चंद्रनसिंह का खजाना बिल्कुल खाली हो गया—
इस युद्ध के कारण हम कंगाली के द्वार पर आ खड़े हुए हैं महामंत्रीजी!
युद्ध में ये सब नुकसान तो होते ही हैं महाराज!

किंतु महामंत्री! अब धन के अभाव में ये राज्य कैसे चलेगा?

महाराज! क्यों न समयासिंह को सबक सिखाया जाए और उसके राज्य पर कब्जा कर लिया जाए ताकि हम अपनी आवश्यकताएं पूरी...
...नहीं, महामंत्रीजी! अब शांति के प्रस्तावों पर राजकीय मोहर लग चुकी है।

तब फिर एक ही रास्ता रह जाता है महाराज कि अपने किसी मित्र देश से ऋण ले लें।
ऋण?!

तभी—
??
महाराज की जय हो!
राजदूत! क्या समाचार है?

महाराज! विशालगढ़ से रानी स्वर्णलता कल यहां पधार रही हैं।
क्या?
हमारी बेटी आ रही है।
अगले दिन विशालगढ़ में–
रानी! तुम्हारे व नन्हें राजकुमार के बिना हम उदास हो जायेंगे।
आप बेफिक्र रहें महाराज, मैं शीघ्र ही पिताश्री से मिलकर लौट आऊंगी।
अटठ्या बांकेलाल! महाराज का ध्यान रखना।
आप निश्चिंत रहें महारानीजी! भला किसी की क्या मजाल की महाराज पर बुरी नजर डाले।
...क्योंकि इस मनबुध्स मूटठ्यड़ की मौत तो मेरे हाथों लिखी है।
उधर कोचवान ने रथ आगे बढ़ाया। उधर बांकेलाल मन ही मन ठहाका लगाकर हंस पड़ा–
ही ही ही ही। अब आयेगा मजा। मैंने रथ का एक पहिया ढीला कर दिया है...
...और एक बिनखैल घोड़ा भी रथ में लगा दिया है...

अब देखता हूं कैसे बचता है इस राज्य का उत्तराधिकारी और अब कोई उत्तराधिकारी ही नहीं होगा तो विक्रमसिंह की मौत के बाद मेरा राजा बनना निश्चित ही है। ही ही ही।
उधर रथ तूफानी गति के साथ चंद्रनगढ़ की ओर बढ़ रहा था—
कोचवान! रथ की गति कुछ कम करो। सैनिक पीछे छूट रहे हैं।
महारानीजी! मैं रथ की गति कम नहीं कर सकता। घोड़े बेकाबू हो गए हैं।
उफ!
रथ रोको कोचवान! अन्यथा भयानक दुर्घटना हो जायेगी। हे भगवान!
मैं क्या करूं महारानीजी! घोड़े काबू में नहीं आ रहे।
ओह! यह क्या?
रथ पलट गया

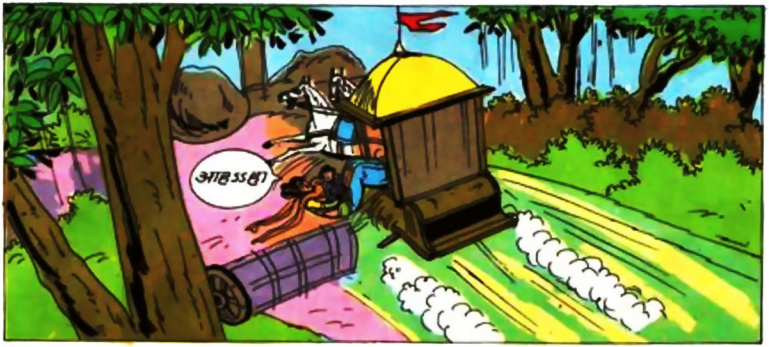
आह sss श्री!

रानी के गिरते ही रथ भीषण तेजी के साथ चट्टान से टकराकर चकनाचूर हो गया—
धड़ाक
आई ई sss

रानी स्पणीलता यह दृश्य देखकर कांप उठी—
उफ! कोचवान जीवित नहीं बचा।
उवांsss

सैनिक भी चीटों खूट गए हैं। आह! अब इस खियाबान् वन में मैं कहां जाऊं? न जाने मैं कहां आ पहुंची हूं!
उवांsss
चुप हो जा मेरे लाल!

लेकिन अभी तो ये मुसीबतों की शुरुआत थी—
अगर दिन ढलने तक सैनिक मुझे न ढूंढ पाए तो...हे ईश्वर! मुझे राह दिखा।

तभी–
अरे! यह क्या? इतना विशालकाय पक्षी।
आह!
उफ्
रानी स्वर्णलता अभी सम्भल पाती कि–
क्रांय
आह!
ज्वांऽऽ
वह विशालकाय पक्षी रानी स्वर्णलता को आकाश में उड़ा ले गया–
ठीक उसी पल सैनिक भी रानी स्वर्णलता को ढूंढ़ते हुए वहाँ आ पहुंचे–
ठहरो। वो देखो।
अरे! यह तो मल्लरानी जी का हार लगता है।

पीछे टूटा हुआ रथ... यहां रानीजी का हार अवश्य ही महारानीजी किसी संकट में फंस गई हैं!
हमें तुरन्त चलकर महाराज को सूचित करना होगा।
हममें से किसी एक को धंधलगढ़ जाकर यह समाचार वहां भी दे देना चाहिए। महाराज चंद्रनसिंह अपनी पुत्री की चुतिमा में अधीर हो रहे होंगे।
और फिर जैसे ही यह समाचार राजा विक्रमसिंह तक पहुंचा—
क्या? टूटा हुआ रथ... ओह... ओर... ये हार तो रानी का ही है।
टूटा हुआ रथ... हा हा हा! लगता है मेरी योजना सफल हो गई है।
??
महाराज! महारानी व राजकुमार का कहीं कुछ पता नहीं है।
उन्हें अंगली जानवर खा गए होंगे। चलो खुदली हुई।
नहीं! ऐसा अनर्थ नहीं हो सकता।
बांके लाल! यह सब क्या हो गया रे? मैं उन दोनों के बिना जीवित नहीं रह सकता। ब हू हू हू। हाय रे!
आप चिंता मत करें महाराज! ब हू हू हू। आपके पश्चात् में राज्य की बागडोर संभाल लूंगा ब हू हू हू।

क्या?
म... मेरा मतलब है महाराज कि मैं रानीजी और राजकुमार को पाताल से भी ढूंढ निकालूंगा।
??
आंय! ये मैं क्या कह गया।
बांकेलाल! अब तो तुम्हारा ही सहारा है। हहहह!
बांकेलालजी हमारी हर मुसीबत में काम आए हैं। यह तो इनका धर्म है महाराज!
बांकेलाल! धन की परवाह मत करो। विशाल सेना ले जाओ। आकाश-पाताल एक कर दो, लेकिन कहीं से भी मेरी स्वर्णलता और कुमार को ढूंढकर ले आओ।
धन!
ठ... ठीक है महाराज!
वो साला पापड़ वाले को अब धन ले जाकर तब तक विशाल-गढ़ नहीं लौटूंगा, जब तक इस चैनी खूंखार राजा की छिंछोरी का बाजा बजाने की खबर मुझे नहीं मिल जाती। ही ही ही ही।
और फिर हमेशा की तरह बांकेलाल इस बार भी अपने अभियान पर बिल्कुल अकेला ही निकल पड़ा–
महारानी व बेटे के गम में मुच्छड़ अब जल्दी ही स्वर्गधाम को प्रस्थान करेगा। ही ही ही।

बांकेलाल तेजी के साथ घोड़ा दौड़ाता दूसरे नगर की ओर बढ़ा चला जा रहा था—
संध्या घिरने से पूर्व ही मैं नगर में पहुंच जाऊंगा।

अचानक—
अरे! ये तो कित्ती राजा का रथ लगता है।
??

रथ निकट आते ही बांकेलाल उछल पड़ा—
अरे! ये तो बांकेलाल है।
राजा चंद्रनसिंह! मुच्छड़ का ई ससुर...!

बांकेलाल को पहचानते ही राजा चंद्रनसिंह व्याकुल हो उठे—
बांकेलाल! कह दो कि वह खबर झूठी है। हमारी पुत्री व धेवता सुरक्षित हैं।
??

और चंद्रनसिंह को इतना निकट देख बांकेलाल का जीतोनी त्रिमाता रूक नई खुराफात से भर उठा—
क्यों न इस चपटी नाक वाले बुड्ढ़ू के साथ ही कुछ ऐसा चक्कर चलाऊं, कि पहले चंद्रनवाद पर ही मेरा अधिकार हो जाए। तब तक विक्रमसिंह की भी छुट्टी हो लेगी। और... ही ही ही।

तुम कुछ बोलते क्यों नहीं बांकेलाल ! मेरा दिल बैठा जा रहा है।

महाराज! मैं आपके ही पास आ रहा था। आपके दामाद्रजी की हालत बहुत पतली है। अगर आप उनके अंतिम दर्शन करना चाहते हैं तो शीघ्र मेरे साथ चलिए।
नहीं! दामाद्रजी को कुछ नहीं हो सकता। मैं अभी तुम्हारे साथ चलता हूं बांकेलाल!

इससे पहले कि चंद्रनासिंह कुछ कह पाता—
जरूरी कीजिए महाराज! इन सैनिकों को भी महारानीजी की तलाश में लगा दीजिए।
ओह! तुम ठीक कहते हो बांकेलाल!

सैनिको! तुम यहीं से महल लौट जाओ। और महल से और सैनिक लेकर हमारी पुत्री की तलाश करो। हम बांकेलाल के साथ विशालगढ़ जा रहे हैं।
ज...जी! जो आज्ञा महाराज!

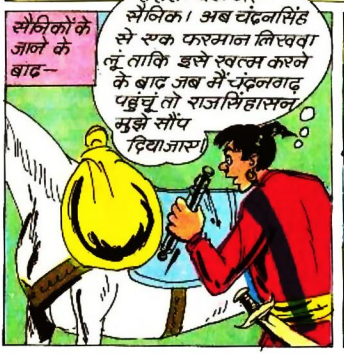
सैनिकों के जाने के बाद—
हे हे हे। चले गए सैनिक। अब चंद्रनासिंह से एक फरमान लिखवा लूं ताकि इसे खत्म करने के बाद जब मैं चंद्रनगढ़ पहुंचूं तो राजसिंहासन मुझे सौंप दियाजाए।

अगले ही पल—
आ हा... हा... हा! अब तू मेरे हाथों से नहीं बच सकता...
??

बांकेलाल! यह तुम्हें क्या... ओह!
अरे!
सांय ऽऽ
फड़ फड़

यह कैसा विचित्र पक्षी है? उफ़! अगर ये चंद्रनसिंह को उठा ले गया तो फिर निश्चित आदेश कौन देगा?

बांके ने तलवार का वार पक्षी पर करना चाहा। लेकिन उसी वक्त चंद्रनसिंह ने बचने के लिए उसकी कलाई थाम ली—
बांकेलाल! बचाओऽऽ
उफ!
इस दृढ़ियल खूसट ने तो मेरा हाथ पकड़ लिया है।

ये तो अपने साथ-साथ मुझे भी मरवायेगा।
अ...अबे खूसट छोड़ मेरा हाथ क्यों मरवाने पर तुला है।

लेकिन नीचे देखते ही बांकेलाल के होश उड़ गए—
ब... बापरे! इतनी ऊंचाई से नीचे गिरा तो यमराज सिर के बल... काले भैंसे पर सवार होकर मेरी आत्मा को परमात्मा में लीन करने पहुंच जायेंगे। बहू हू हू।

बेताल होते बकरे की तरह बांकेलाल चीख पड़ा –
म... महाराज! ह्... छोड़ना मत! अ... आपको अपनी बुढ़िया की कसम!
बांकेलाल! तुम क्या कह रहे हो! हवा की सांय-सांय के सिवाय मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा। उफ!
हे भोले शंकर! कहां फंसा दिया तूने मुझे। अगर हवा में लटकाना ही था तो कम से कम किसी तगड़े पहलवान से मेरा हाथ पकड़वाया होता। ब हू हू हू।
बांकेलाल! क्या तुम मेरी आवाज सुन रहे हो?
मैं तेरी तरह बहरा नहीं हूं बुड्ढे!!
बांकेलाल! अपने भगवान को याद कर लो!
क... क क्यों?
म... मेरे हाथ में द... दर्द हो रहा है। मैं अधिक देर तक तुम्हें पकड़े नहीं रह सकता।
क्या?

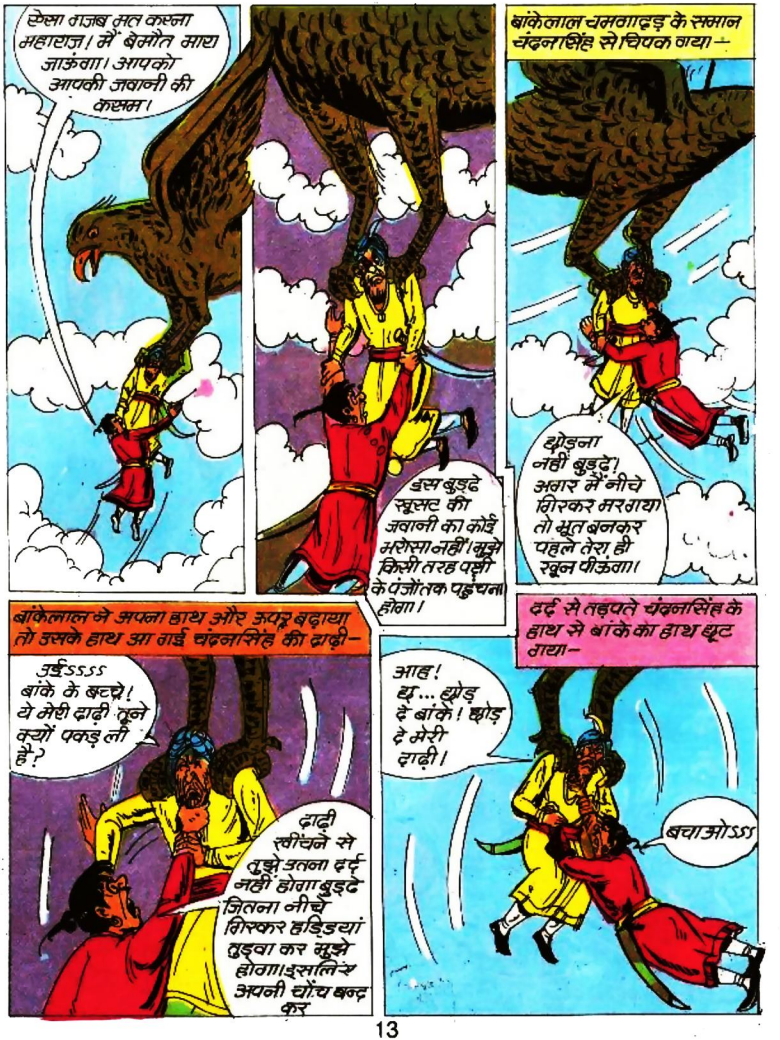
ऐसा नाज़ुक मत कहना महाराज। मैं बेमौत मारा जाऊंगा। आपको आपकी जवानी की कसम।
इस बुड्ढे खूसट की जवानी का कोई भरोसा नहीं। मुझे किसी तरह पक्षी के पंजों तक पहुंचना होगा।
बांकेलाल चमगादड़ के समान चंदनसिंह से चिपक गया।—
छोड़ना नहीं बुड्ढे! अगर मैं नीचे गिरकर मरगया तो भूत बनकर पहले तेरा ही खून पीऊंगा।
बांकेलाल ने अपना हाथ और ऊपर बढ़ाया तो उसके हाथ आ गई चंदनसिंह की दाढ़ी—
उर्र्ड्ड्ड्ड्स बांके के बच्चे! ये मेरी दाढ़ी तूने क्यों पकड़ ली है?
दाढ़ी खींचने से तुझे उतना दर्द नहीं होगा बुड्ढे जितना नीचे गिरकर हड्डियां तुड़वा कर मुझे होगा। इसलिए अपनी चोंच बन्द कर
दर्द से तड़पते चंदनसिंह के हाथ से बांके को हाथ छूट गया—
आह! छ... छोड़ दे बांके! छोड़ दे मेरी दाढ़ी!
बचाओऽऽऽ

अगले ही पल बांकेलाल का हाथ दाढ़ी से फिसल गया और –
??
अरे! ओह! मैं गिरा।
दुष्ट बांकेलाल! पहले तूने मुझे तलवार से मारने की चेष्टा की। फिर गाली दी। बिल्कुल सही दण्ड मिला है कम्बख्त को।
लेकिन, अब मेरा क्या होगा!?
बांकेलाल पंख कटे पंछी की तरह पृथ्वी की ओर बढ़ रहा था –
बेटा बांकेलाल! अब.. अब तू अपने मौले बाबा को याद कर ले। यमराज के दरबार में तेरी मौत की चिट्ठी पहुंच गई होगी!
लेकिन यह क्या? पृथ्वी की बजाय बांकेलाल गिरा एक तालाब में –
छपाक
हाय! मैं तो मरा!

और जब वास्तविकता से वाकिफ होकर उसने अपना सिर पानी से बाहर निकाला—
इसका मतलब मैं तालाब में गिरकर बच गया हूं।
पिच्चऽऽ
प्रसन्नता के आवेग में बांकेलाल इतनी जोर से उछला कि—
याहूऽऽ ईयाऽऽ
धड
उईऽऽ
इस बार तो आंखें खुलते ही बांकेलाल चकाचौंध हो उठा—
ओह! यह तीव्र चमक कैसी?

अगला पल तो बांके लाल के लिए उछल ही पड़ने का था-
बहुमूल्य चमकीले पत्थर!
म... मैं तो लगाता हूं, हीरों की घाटी में आ गया हूं।
याहू! इतने ढेर सारे हीरे। ये सब मेरे हैं। हा हा हा।
ठन
ऊऽऽ
आऽऽ
ईऽऽ
बाप रे! मुझे इतनी जोर से हीरे नहीं उछालने चाहिए थे।
खैर, कोई गम नहीं। मेरे साथ तो बड़े-बड़े दर्दनाक किस्से हुए हैं। हीरों के इतने विशाल भण्डार के आगे ये दर्द तो कुछ भी नहीं।

तब—
या...ये कुंफकास्त्र के स्वर कैसे हैं?
फूं...फां... फूं

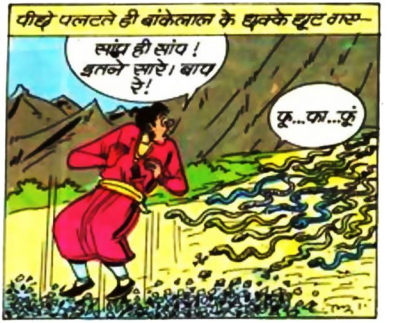
पीछे पलटते ही बांकेलाल के छक्के छूट गए—
साक्षात ही सांप! इतने सारे। बाप रे!
फूं...फां...फूं

सैकड़ों सांपों को अपनी ओर भयानक ढंग से बढ़ता देख बांकेलाल के सिर से फौलाद का नशा तुरन्त उतर गया—
माना बेटा बांके! तरसा थे तुझे काट-काटकर झलनी बना देंगे।
फूं...
फां...
हिस्स

भागते-भागते बांके ने पलटकर देखा—
उफ! ये तो दौड़े ही चले आ रहे हैं। एक मुसीबत से निकला, दूसरी में फंस गया। बुरा हो उस बहरे राजा चंद्रनासिंह का। बचाओ!

अचानक—
यह मेरी आंखें क्या देख रही हैं। इतने भयानक स्थान पर महल!
फूं...
फां...

फूंऽऽ
सांपों से बचने के लिए फिलहाल मुझे इसी महल की शरण लेनी होगी।
महल में घुसकर बांकेलाल ने जैसे ही पलटकर देखा—
अरे वाह! सभी सांप महल के द्वार से लौट रहे हैं।
वाह रे भोले शंकर! तेरी माया। कभी मौत के मुंह में धकेल देता है, कभी बचा लेता है।
लेकिन यह विचित्र महल है किसका? मुझे घूम-फिरकर इस बात का पता लगाना चाहिए।

इसी तरह घूमता-फिरता बांकेलाल जब एक कक्ष में पहुंचा—
आश्चर्य है। इतने बड़े महल में कोई भी दिखाई नहीं... अरे! वह स्त्री कौन है? और वह बच्चा?
स्त्री की शक्ल देखते ही वह आश्चर्य से उछल पड़ा—
रानी स्वर्णलता
इसका तो किसी ने खून कर दिया है।
राजकुमार पिंजरे में बन्द है।
उवांऽऽऽ
ये दोनों यहां कैसे आ पहुंचे? और रानी का खून किसने किया?
बांकेलाल! तेरे लिए ये सुनहरी मौका है। सोच क्या रहा है। आगे बढ़ सूरमे! कर दे राजकुमार की भी जिन्दगी का अंत।

बांकेलाल रानी स्वर्णलता के निकट पहुंचा-
ही ही ही। इसी खंजर से इसके बेटे का भी काम तमाम कर देता हूं।
उंह!
अगले ही पल-
आह!
??
बांकेलाल! तुम?
अरे! ये तो खंजर निकालते ही जीवित हो उठी!
बांकेलाल को देखते ही रानी स्वर्णलता मानो प्रसन्नता से पागल ही हो उठी-
ओह, बांकेलाल! मैं जानती थी कि तुम मुझे जरूर ढूंढ निकालोगे। महाराज कैसे हैं बांकेलाल?
उवांऽऽ
ठ... ठीक है महारानीजी!

ओह! मेरा लाल!
उंहां
सोच क्या रहा है बांकेलाल! खंजर दोनों के आर-पार कर दे।
बांकेलाल दबे पांव रानी स्वर्णलता की ओर बढ़ा। तभी–
रुक जाओ बांकेलाल! मेरी बेटी पर खंजर का वार करने की चेष्टा की तो मैं तुम्हारे शरीर के दो टुकड़े कर दूंगा।
क... क... कौन?
पिताश्री! आप... आप यहां कैसे पहुंचे? और... और ये अभी आप क्या कह रहे थे?
ये कम्बख्त यहां कैसे पहुंच गया?
मैं ठीक कह रहा हूं बेटी! इस धूर्त ने मेरे भी प्राण लेने की चेष्टा की थी। इसने तो वार कर ही दिया था। अगर वह पक्षी बीच में न आ जाता तो...
बांकेलालजी! यह मैं क्या सुन रही हूं?
म...महारानीजी! य...ये झूठ है। मैं तो क्रूरअसल उसी पक्षी को ही मारने के लिए झपटा था...

...जिसे मैंने नीचे खड़े महाराज पर झपटते हुए देख लिया था। लेकिन इससे पूर्व कि मैं उसे स्वल्प कर देता...
ओह! ऐसे ही
पक्षी का पंख उस स्थान पर पड़ा था, जहां महारानीजी का हार सैनिकों को मिला था।

इसका मतलब रानीजी को भी यही दुष्ट पक्षी उठाकर ले गया होगा।

बस महारानी जी! यह सोचते ही मैंने अपनी कलाई अड़ा कर दी और महाराज ने भी समझदारी दिखाते हुए मुझे तुरन्त पकड़ लिया।
ओह! किन्तु बांकेलाल की कलाई तो मैंने अपनी जान बचाने के लिए पकड़ी थी।

बांकेलालजी ठीक कह रहे हैं चिताश्री! ये तो स्वप्न में भी किसी का बुरा नहीं सोच सकते। अगर आज ये मेरे सीने से खंजर न खींच निकालते तो मैं न जाने कब तक उस दुष्ट पाताल राक्षस की कैद में पड़ी तड़पती रहती।

पाताल राक्षस?
हां?

...वह भयानक पक्षी मुझे उस राक्षस के महल में झाड़कर उड़ गया...
न जाने मैं कहां आ गई हूं?

तभी...
हा हा हा हा! आज तो शाकाल बहुत बढ़िया शिकार लाया है मेरे भोजन के लिए।

...लेकिन मुझे देखते ही उसकी नीयत खराब हो गई...
बहुत खूबसूरत है रे तू! खबरदार! मुझे छूने की चेष्टा मत करना दुष्ट!
खबरदार नहीं अप्सरा! मैं तुझे मारूंगा नहीं, बल्कि तुझे अपनी पत्नी बनाऊंगा। और अपनी बेशकीमती हीरे की अंगूठी मैं तेरे नाम कर दूंगा आ हा हा हा।

...मेरे बार-बार इन्कार करने पर उसे क्रोध आ गया और...
हा हा हा हा। अगर तू मेरी न हो सकी तो किसी की न हो सकेगी। यह ले चख मजा इन्कार का।
आह!

जब तक ये खंजर तेरे सीने में रहेगा। तू मृत रहेगी। मैं रोज तुझसे तेरी स्वीकारोक्ति लेने आऊंगा। किसी दिन तू मुझसे विवाह के लिए तैयार हो जायेगी। उसी दिन तुझे इस कष्ट से मुक्ति मिल जायेगी।
आह!

... और आज बांके लाल ने खंजर मेरे सीने से निकाल कर मुझे इस कष्ट से मुक्त कर दिया।
फूटी किस्मत! काश, मुझे ये सब पता होता तो मैं कभी खंजर बाहर न निकालता।
??

बांकेलाल! मुझे क्षमा कर दो। तुम्हें पहचानने में मुझसे बहुत बड़ी भूल हुई।
ऐसा कहकर आप मुझे शर्मिंदा कर रहे हैं महाराजा
हूहूहूहू
!?
किंतु बांकेलाल! तुम्हें कैसे पता लगा कि खंजर निकालने से पाताल राक्षस का जादू छूट जायेगा।
गए काम! कोई बहाना बनाना पड़ेगा। चूहा... सूझ जा तरकीब।
व... वो... मैं महारानी जी...
...अब मैंने आपको मृत व राजकुमार को जीवित पिंजरे में देखा तो सोचा—
...भला ऐसा कैसे हो सकता है। जिसने रानीजी को खंजर मारा है, उसने राजकुमार को जीवित क्यों छोड़ दिया? और फिर खंजर लगाने से रानीजी के सीने से रक्त भी नहीं निकला।
फिर क्या था? मुझे इस बात में कोई भेद नजर आया। मैंने आपके सीने से खंजर निकाल लिया और आप जीवित हो उठीं।
वाह बांके! सचमुच तुमसे बड़ा बुद्धिमान व्यक्ति पूरे मंत्रालय में कहीं न होगा।
लेकिन पिताश्री! आप यहां कैसे पहुंचे?
मुझे उस पक्षी ने यहां ला पटका था।

तभी—
आ हा हा हा! इतने सारे शिकार!
मेरे बाप!
??
पिताश्री... बांकेलाल! यही है वो पाताल राक्षस। खत्म कर दो इसे।

बेटी! मैं इस दुष्ट से युद्ध में मारा जाऊं तो तुम बांकेलाल को हमारे बाद चंदनगढ़ का राजा घोषित कर देना।

आकाल! तुम भी इस युद्ध का मजा लो। हा हा हा

तभी चंदनसिंह ने तलवार का वार कर दिया—

पाताल राक्षस ने चंदनसिंह को दबोच लिया—
आह!

ओह !
धड़ाक
हाय!

इधर बांकेलाल का मस्तिष्क तेजी से कुछ सोच रहा था –
किसी तरह इस पाताल राक्षस को समाप्त कर दूं। फिर चंदनसिंह को मारने की एक युक्ति भी मैं सोच चुका हूं। चंदनसिंह की मृत्यु के पश्चात रानी स्वर्ण लता मुझे चंदनगढ़ का राजा घोषित कर ही देगी।

यह सोचकर बांकेलाल ने अभी खंजर उठाया ही था कि –
अरे! आह!
हा हा हा! तू क्या सोच रहा है रे मच्छर? अब मरने के लिए तैयार हो जा।

पाताल राक्षस ने बांके को भी उठाकर फेंक मारा –
आह!
बांकेलाल!
धड़ाक

यह देख चंदनसिंह ने पुनः पाताल राक्षस को ललकारा –
पिताश्री!
पाताल राक्षस! मैं तुझे जीवित न छोड़ूंगा।

इधर बांकेलाल के होश जैसे ही दुरुस्त हुए-
ओह! पाताल राक्षस! पहले तेरे इस शाकाल के ही टुकड़े कर दूं, जिसके कारण मेरी योजना असफल हो गई। वरना वहीं जंगल में...
...ही में चंदनसिंह से हस्ताक्षर लेकर उसे मार डालता।

बांकेलाल ने अपूर्व शक्ति लगाकर खंजर शाकाल पर फेंक मारा-
खच्च
क्रांऽऽऽय
ओह, बांकेलाल! लगता है इस पक्षी में ही इस राक्षस के प्राण बसे थे, जिसे तुमने खत्म कर दिया।
बांकेलाल! तुमने तो कमाल कर दिया!

इसी के साथ-
खच्चाक
??
!!

लेकिन बांकेलाल! तुम्हें कैसे पता चला कि शाकाल को मारने से राक्षस मारा जायेगा।
?!
व... वो महाराज! अभी-अभी स्वयं भगवान शंकर ने ही मुझे यह रहस्य बुलाया था।

और आप तो जानती ही हैं महारानीजी कि भगवान शंकर की मुझ पर कितनी कृपा है।
वाह, बांके!

किंतु अब हमें शीघ्र ही यहां से विशालतारू चलना चाहिए। वहां महाराज विक्रमसिंह हमारी चिंता में घुले जा रहे होंगे!

ठहरिये महाराज! लाओ हाथों में हीरों की घाटी वाले उस विशाल खजाने को भी प्राप्त कर लेना चाहता हूं।

हीरों की घाटी! खजाना!

बांकेलाल ने दोनों हीरे निकालकर चंद्रनसिंह को दिखाए—

हां महाराज! यह देखिए! ये हीरे उसी घाटी से मैंने उठाए थे!

हां बांकेलाल! पाताल राक्षस ने मुझसे भी हीरों की घाटी का जिक्र किया था।

ओह! अगर ये खजाना मुझे मिल गया तो मेरी खोई हुई प्रतिष्ठा मुझे...

... वापस मिल जायेगी!

मुझे वहां ले चलो बांकेलाल!

क्षमा करें महाराज! मैं आपको वहां तक पहुंचने का रास्ता तो बता सकता हूं। किंतु महारानीजी व राजकुमार को अकेला छोड़कर आपके साथ नहीं जा सकता।

ठीक है। तुम मुझे रास्ता ही बता दो। खजाना मैं स्वयं ले आऊंगा।

तो ठीक है महाराज सुनिये...

बांकेलाल ने रास्ता बता दिया।

रास्ते के विषय में जानकारी लेकर चंद्रनसिंह शीघ्रता के साथ बाहर की ओर भागा—

वाह! इतने बड़े-बड़े हीरों से तो मेरे राज्य की काया ही पलट जायेगी।

ही ही ही! बच्चू! हीरों की रक्षा कर रहे उन भयानक सर्पों से बच गया तो खजाना तेरा! ही ही ही।

चंद्रनसिंह को निकले थोड़ी ही देर हुई थी कि–
अरे! बांकेलाल जी वह रहे।
सैनिक।
बांकेलाल जी ने ही राक्षस को मारकर रानी जी व राजकुमार की जान बचाई है।
वाह!
महारानी-जी व राजकुमार भी कुशल हैं।
बोलो बांकेलाल जी की...
जय...
जय...
ये मनहूस यहां कहां से आ पहुंचे।
सैनिको! आप सब लोग यहां कैसे पहुंचे?
महारानी जी! आप की तलाश में महाराज ने एक महा यज्ञ करवाया। यज्ञ के पश्चात् राज-गुरू ने इस महल...
...का पता पा लिया। और हमने पूरी सेना के साथ महल को घेर लिया।
तभी–
बांकेलाल! वहां तो बहुत सारा खजाना अभी और पड़ा है। मुझसे जितना बन सका, मैं यह उठा लाया। तो जीवित ही लौट आया। लेकिन वे सर्प कहां गए?
और फिर सैनिकों को देखते ही राजा चंद्रनसिंह ने बाकी का खजाना लाने का आदेश दे दिया। सैनिक के जाते ही–
बांकेलाल! एक बात समझ में नहीं आई। विशाल खजाने के भण्डार के साथ मैंने वहां सैकड़ों सर्पों की छिन्न कटी लाशें भी पड़ी देखी हैं। इसका क्या रहस्य हो सकता है?

फिर आधे खजाने को चंदनगढ़ और आधे को विशालगढ़ पहुंचा दिया गया। राजा विक्रमसिंह ने जैसे ही बांकेलाल की सफलता के विषय में सुना -

मैं बांकेलाल को हीरों की घाटी के दो हीरे इनाम में देने की घोषणा करता हूं।
बहुहूहू! न मैं रानी स्वर्णलता के रथ के पहिए की कील निकालता, न रानी व राजकुमार गायब होते। न मेरी मुलाकात रास्ते में चंद्रनासिंह से होती और न इतना बड़ा खजाना मेरे हाथ से निकलने का मुझे अफसोस होता। पर हाय री फूटी किस्मत!